आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- balaknamaeditor@gmail.com

अंक-92 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | फरवरी 2021 | मूल्य - 5 रूपए

कोरोना का प्रभाव कम होने पर

अब कैसे शुरू होगी पटरी पर बच्चों की जिंदगी ?

बालाकनामा सलाहकार शंन्नो

बालकनामा के पत्रकारों ने समय-समय पर बच्चों की समस्याओं को समाज,सरकार के बीच लाने का हर संभव प्रयास किया है। आज भी वह दिन याद है जब हमारे देश में 22 मार्च 2019 को पहला लॉकडाउन लगा था और उसके बाद से ही हमारे देश की जो आर्थिक स्थिति थी वह बेहद कमजोर हो गई। और इस दौरान सबसे ज्यादा सड़क एवं कामकाजी बच्चे एवं उनके माता-पिता प्रभावित हुए। बच्चों के परिवार बेघर हो गए, बच्चे सड़कों पर आ गए, बच्चों की पढ़ाई छूट गई,अथवा भारी संख्या में बच्चे बाल मजदूरी कर रहे दर-दर भटकने लगे थे,बच्चों के खाने के लाले पड़ गए थे, बच्चों के परिवार भारी कर्ज में डूब गए। तथा उनके पुरने रोजगार छूट गये। और इस वजह से उन्हें भारी नुकसान का सामना करना पड़ा।पत्रकारो ने इन्हीं बच्चों और उनके माता पिता से संपर्क किया और यह जानने का प्रयास किया गया। कि अब जबकि कोरोना वायरस का प्रभाव देश से कम होता जा रहा है तो सड़क पर रहने वाले बच्चे, काम करने वाले बच्चे,अपनी जिंदगी पटरी पर कैसे लाएंगे?कैसे फिरसे एक नई शुरूआत करेंगे?इस बात का जायजा लेने हेतु पत्रकारों ने अलग-अलग क्षेत्रों

में जाकर बच्चों से बातचीत की उनके माता-पिता से बातचीत की कि आने वाली घड़ी में उनका क्या प्लान है ?वह कैसे अपनी जिंदगी को दोबारा शुरू कर पाएंगे ?जबकि धीरे-धीरे देश में सब कुछ पहले जैसा होता जा रहा है।और यह अनुमान लगाया जा रहा है कि अब देश में पहले जैसे अच्छे दिनों की शुरूआत हो चुकी है।तो सराय काले खां में जब पत्रकार रवि ने स्पोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया उस दौरान बच्चों से लॉकडाउन से संबंधित बातचीत की गई साथ ही बच्चों से यह भी जानने की कोशिश की गई। कि अब जब्कि सब कुछ पहले की तरह धीरे धीरे ठीक हो रहा है।तो आप अपने जीवन को पहले की तरह व्यवस्थित तरीके से चलाने के लिए क्या क्या कोशिशें कर रहे हो? या आपका आने वाले समय के लिए कोई प्लान है इसके जवाब में 12 वर्षीय रहीम ने बताया कि अब वह ध्यान से मन लगाकर पढ़ाई करेगा।और ओपन बेसिक एजुकेशन (ओ.बी.ई.)में एडमिशन लेकर अपनी पढ़ाई पूरी करेगा।इसी कड़ी में 14 वार्षिय जावेद ने बताया। कि अब कुछ कुछ काम धंधे शुरू होने लगे हैं। और मैं भी शादी पार्टी के काम पर जाने लगा हूं। जिसके बाद अब उनकी आर्थिक स्थिति आने वाले समय में फिर से पहले की तरह अच्छी हो जाएगी। 13 वार्षिय सुल्तान ने बताया कि अब मैंने एक प्लान बनाया है। जिससे कि मेरी पढ़ाई भी और काम,दोनों हो जाए। इसके लिए अब मैं सुबह जल्दी उठकर स्टेशन जाता हूं और बोतल चुनता हूं। दोपहर में पार्क में आके पढ़ाई करूंता हूँ जिससे कि मेरे दोनों कार्य सफलतापूर्वक हो जाए। 15 वर्षीय कवि ने बताया। कि अब वह अपनी माताजी से बात करेगा कि वह उसे एक रेडी दिलवादे जिससे कि वह

शेष पृष्ठ 2 पर

खाना बर्बाद न करें जरुरतमंद बच्चों का पेट भरें

बातूनी रिपोर्टर सूरज एवं रिपोर्टर आंचल लखनऊ

बालकनामा रिपोर्टर आंचल ने फोन के माध्यम से श्रम विहार नगर के कांटेक्ट पॉइंट के बालकनामा बातूनी रिपोर्टर सूरज से संपर्क किया तो बातूनी रिपोटर सूरज ने बताया कि जहाँ एक तरफ कोरोना महामारी के कारण खाने- पीने की बहुत आभाव हुआ है वहीँ दूसरी ओर कुछ आसपास रहने वाले लोग खाने की बबार्दी कर रहे हैं वह हर रोज भोत सा खाना कूड़े की ढेर में फेंक देते हैं जहाँ बच्चे हर रोज कूड़ा कचरा बीनने के लिए जाते हैं। उसी कूड़े के ढेर में खाने लायक खाना कूड़े में पड़ा रहता है जबकि उस कचरे ढेर के पास गाय या अन्य जानवर वहां नहीं होते इस कारण वह खाना जानवर के मुंह भी नहीं लग पाता है और कुछ समय बाद वह खाना कूड़े के ढेर में पीडीए पीडीए साद जाता है यह देखकर हम बच्चो को बेहद दुःख होता है कियुनकी हम बच्चो को भाहूत मुश्किल से खाना खाने को मिलता है हम बच्चे यही चाहते हैं की आप लोग इस तरह खाने की बबार्दी न करें यदि आप खाना किसी जरूरत मंद बच्चे को देदो उस बच्चे का पेट भी भर जायेगा एवं खाना कूड़े के ढेर में फेंक कर खाने का अपमान भी नहीं होगा। सूरज ने यह भी बताया कि हमारे इधर बस्ती में गाय ज्यादातर नहीं आती है तो वह जो खाना पड़ा रहता है वह धीरे धीरे सड़ता रहता है जो कि बाद में बहुत बदबू देने लगता है साथ ही साथ हमारेयह भी बताया कि जब यह करोना महामारी शुरू हुई थी जिसके कारण लॉकडाउन लग गया था लेकिन लॉक डाउन में कोई ना कोई लोग आते रहते थे बस्ती में खाना बांटने या फिर राशन देने आते रहते थे लेकिन जब से यह लॉक डाउन खुला है तब से लेकर अब तक कोई भी हमारे बस्ती में नहीं आता है राशन बांटने या फिर खाना बांटने अभी भी हमारे मम्मी पापा को बाहर घरों में जल्दी कोई काम नही दे रहा है जिसके कारण अभी भी हमें खाने-पिने की बहुत दिक्कत हो रही हैलेकिन यहां पर कुछ ऐसे लोग हैं जो खाना दे नहीं सकते लेकिन बर्बाद कर सकते हैं और जब हम समझाने जाते हैं तो हमें फटकार देते हैं और कहते हैं तुम अपने काम से काम रखो

10 रूपए की मजदूरी से दिन भर में कमा लेते हैं 100 रूपए मात्र

बातूनी रिपोर्टर राहुल एवं रिपोर्टर आंचल लखनऊ

बालकनामा रिपोर्टर आंचल ने मड़ियांव कॉन्टेक्ट प्वाइंट के बच्चों से बातचीत की और उनकी समस्या जानने की कोशिश की। तो मडियांव पॉइंट की बातूनी रिपोर्टर राधा ने बताया कि यहां के बच्चो ने बुरखा खरीद कर लाते है और फिर इन पर कलर करते हैं इस विषय पर रिपोर्टरने ओर जानकारी प्राप्त करने के लिए फोन के माध्यम से बच्चों से कांटेक्ट किया तो 12 वर्षीय परिवर्तित नाम राहुल ने बताया कि

पहले हम बच्चे बुरखा खरीद कर लाते हैं उसके बाद बुरखे पर कलर करते हैं राहुल ने बताया हम बुरखे पर रंग इसलिए करते हें ताकि हम बुरखे अच्छे दामो में बाख सके।

बातूनी रिपोर्टर काजल ने बताया की एक बुरखे पर रंग करने के हमें 10 रूपए मिलते हैं दिनभर में हम लगभग 10 बुरखे रंग कर लेते हैं। रिपोर्टर ने जब इस बारे में जायजा लिया तो पता चक्काला की बच्चे इसी तरह अलग अलग त्यौहारो पर अलग अलग कामो में ;लिप्त हो जताए हैं। वर्तमान में में

शेष पृष्ठ 2 पर

मां की मदद करने हेतु सुबह 4:00 बजे से करता है मजदूरी :-राजू

बालकनामा नेटवर्क

अमीनाबाद में रहने वाले बच्चों से बालकनामा की रिपोर्ट आंचल ने फोन के माध्यम से बच्चों से बात करना शुरू किया तो पता चला कि ऐसे कई अनेक परिवार हैं जहां पर उन बच्चों के माता-पिता में से एक जन घर में नहीं रहता है। जो घर का कामकाज सम्भाल सके। ऐसे में राजू नामक एक बच्चे से बात हुई जिसकी उम्र तकरीबन ७ साल की है बच्चे ने बताया कि उसके पिता दूसरी शादी करके कहीं अलग रहते हैं उसका एक भाई है जो कि उससे बड़ा है उसकी उम्र तकरीबन 3 साल की है वह भी साथ में रहता है कुल परिवार में 3 लोग रहते हैं अपना पेट पालने के लिए मां लोगों के घर में बर्तन मांजने का काम करती है और उसी से जो पैसे मिलते हैं बच्चों का और अपना गुजारा करती है राजू ने बताया मैं केवल 7 साल का हूँ। और मैं अपनी माता जी की मदद करने के लिए

कूड़ा बीनने का काम करता हूँ मैं सुबह 4:00 बजे से घर से निकल जाता हूँ और जब शाम को घर आता हूँ तो कंधे पर एक बोरा होता है जिसमें बहुत सारा दुनिया का फेंका हुआ कूड़ा होता है घर लाकर उसको अलग-अलग बोरों में करके बेचता है और जो पैसे मिलते हैं वह अपनी मां को देता है ताकि मेरी मां को घर का पालन पोषण करने में मदद मिल पाए।रिपोर्टर ने जब बच्चे की समस्या सुनी तो वह बड़ी अचंभित हो गई कि केवल ७ साल का बच्चा अपने मान की मदद करने हेतु सुबह ४ बजे से ही कूड़ा बीनने के लिए बिकल पड़ता है। जिस उम्र में बच्चों को ठीक से पढने लिखने की समझ नहीं रहती इतनी छोटी उम्र में वह घर के पालन पोषण करने में अपनी मान के साथ जुट गया है। ऐसे में इस बच्चे की पढ़ाई कैसे होगी लगातार रिपोर्टर आँचल के बात करने के पश्चात राजू अब थोडा बहुत पढ़ाई पर ध्यान देने लगा है वह धीरे धीरे अपना नाम लिखना सीख रहा है राजू बहुत खुश है की उसे काम करते हुए पढने के मूका मिल रहा है।

10 रूपए की मजदूरी से दिन भर में कमा लेते हैं 100 रूपए मात्र

पृष्ठ 1 का शेष

अभी बच्चे ज्यादातरसस्ते दामो में ही बुरखे पर रंग करने का काम कर रहे हैं। जिससे वह अपने घर का खर्चा चलाने की कोशिश कर रहे हैं। उन पैसों से कुछ हद तक बच्चो की तथा उनके अभिभावकों की समस्याओं का समाधान हो रहा है।

100000 रूपए का कर्ज चुकाने हेतु दुकान में पूरी कचोडी बनाकर बेचता हूं

बातूनी रिपोर्टर सूरज एवं रिपोर्टर संगीता लखनऊ

लखनऊ की रिपोर्टर संगीता ने जब श्रम विहार नगर कांटेक्ट पॉइंट के बच्चों से कॉन्फ्रेंस कॉल के माध्यम से बातचीत

की और बच्चों की समस्या जानने का प्रयास लिया तो बातूनी रिपोर्टर सूरज ने बताया कि दीदी यहां पर एक बच्चा रहता है जो कि स्कूल जाता है और घर का खर्चा चलाने के लिए उसने एक दुकान खोल रखी है जिसमें वह पूड़ी, कचोडी,पकौड़ी,इत्यादि बनाता है। सूरज ने 13 वर्षीर्या परिवर्तित नाम अब्दुल से दुकान पर बैठने का कारण पता किया तो अब्दुल ने बताया की जबसे से कोरोना महामारी जैसी बीमारी आई जिसके कारण से लॉकडाउन हो गया था तो इसी लॉकडाउन में मेरे मम्मी पापा ने किसी से 100000 रूपए का कर्ज लिया था जो कि अब अपना कर्ज मांग रहे हैं। इसी वजह से मम्मी पापा के साथ- साथ मैं भी दुकान मैं पूरी कचोडी, पकोड़ी तलने का काम करता हूँ जिससे हमारे उपर से 100000 रूपए का कर्ज जल्दी अदा हो जाये अब्दुल ने बात करने के दोरान यह बताया कि मुझे कढ़ाई में पूड़ी कचौड़ी बनाते हुए डर लगता है लेकिन उसके बावजूद भी मुझे काम यह काम करना पड़ रहा है अगर इस समय मैं मम्मी पापा के साथ काम नहिं करूंगा तो हमारा कर्ज जल्दी चिकता नहीं हो सकेगा। अभी मुझे स्कूल में बुलाकर होमवर्क मिलता है वह होमवर्क भी मैं करता हूँ लेकिन सतझ साथ मैं अपना दुकान का काम भी करता हूँ इसी तरह मैं हर रोज अपने मम्मी पापा की मदद करता हूँ मुझे पूरी कचोडी त्टेल में तलते समय डर भी लगता है की कही यह जो तेल वाला काम है इससे मुझे कोई नुकसान न हो जाये मुझे बहुत डर लगता है की कही यह तेल पलट ना जाए।लेकिन डरते डरते मैं यह काम बड़े ध्यान से करता हूँ।

अब कैसे शुरू होगी पटरी पर बच्चों की जिंदगी ?

पृष्ठ 1 का शेष

अपना चप्पल बेचने का काम फिरसे शुरू कर सके। क्योंकि इससे पहले वह किसी और के यहां चप्पल बेचने का काम करता था। परंतु उसका अनुभव कुछ ज्यादा अच्छा नहीं रहा इसलिए अब वह अपना ही काम करने की सोच रहा है। इसी कड़ी में पत्रकार दीपक से मोके पर 16 वर्षीय समीर ने बताया कि भईया कोरोना की वजह से जो हमारा काम बंद हो गया था अब लोग हमें ढोल बजाने के काम पर बुलाने लगे हैं। और कमाए हुए पैसे से मैं घर का थोड़ा बहुत कर्जा भी खत्म करवा रहा हूं। जिससे मेरी घर की स्थिति में थोड़ा बहुत सुधार होता जा रहा है,16 वर्षीय राधिका ने बताया कि भईया जिस बस्ती में हम रहते हैं हमारी बस्ती के सामने ही एक अस्पताल हैं जिसमें कॉविड के दौरान कई कोविड पेशेंट आते थे लेकिन कोविड कम होना की खबर ने हमें बेहद खुश किया है। यह हमारे लिए बहुत अच्छा संदेश है क्योंकि अब हम बाहर मास्क लगाकर बिना डरे खेल-कूद कर सकते हैं,13 वर्षीय माही ने बताया कि मेरे पापा कान साफ करने का काम करते हैं लोकडाउन खुल तो गया था लेकिन कोरोना के डर से काफी लोग पापा के पास कान साफ करवाने के लिए नहीं आते थे। जिससे कि पापा का काम कम होता जा रहा था इसलिए मुझे गुब्बारे बेचने के काम पर जाना पड़ रहा था। जिससे मैं पढ़ाई एवं खेलकूद नहीं कर पा रहा था। लेकिन जैसे-जैसे कोविड-19 कम होता जा रहा है पापा का काम बढ़ता जा रहा है और मैं अब घर पर रहकर पढ़ाई करने लगा हुँ मुझे अपनी पढ़ाई करने का पूरा मौका मिल रहा है। 15 वर्षीय नेहा ने बताया की करोना से पहले पापा ढोल बजाने के काम पर जाते थे लेकिन करोना की वजह से जब से पापा का काम कम हो गया तब से हमने मोमोज चौमिन की दुकान अपनी बस्ती के बाहर खोल ली थी और अब 4:00 बजे से हम दुकान लगाते हैं।लेकिन दुकान के लिये मोमोस, चौऊमीन बनाने का काम हमें 11 बजे से ही करना पड़ता है इसलिए हम हर रोज जल्दी सुबह उठते हैं। और 11 बजे से मोमोस और चाओमीन बनाते हैं उसके बाद 4 बजे से हम अपनी दुकान लगाते है।अब मुझे जब थोड़ा वक्त मिलता है तो मैं पार्क में जाकर अपने दोस्तों के साथ खेला करती हूं। इसी तरह हमारे दिन की शुरूआत होती है। 12 वर्षीय काजल परिवर्तित नाम ने बताया मेरे माता पिता ने कर्ज लेकर एक छोटी सी परचून की दुकान की है इस तरह से हम अपनी जिंदगी की शुरूआत कर रहे हैं। इसी कड़ी में 13 वर्षीय दिलेर ने कहा कि अब हम अपने माता-पिता के साथ ब्लाउज बेचने का काम कर रहा हूं। वहीं 12 वर्षीय राधा ने कहा कि अब हमारा काम दोबारा शुरू हो गया है लेकिन हमारी पुरानी कोठी की मालिक ने हमें नहीं बुलाया हम दूसरी जगह कोठी में काम करने लगे हैं। साथी राधा ने यह भी बताया कि उन्हें जो पहले पैसे मिलते थे अब बहुत कम पैसों में वह काम कर रही है। इसी कड़ी में 14 वर्षीय राजू ने बताया कोरोना वायरस हमारे देश में कम तो हो गया है लेकिन अभी भी हमें काम की तलाश है और हमें आसानी से काम नहीं मिल पा रहा है। इसी कड़ी में 14 वर्षीय राधिका जो आगरा में रहती है ने बताया देश में अब सब कुछ धीरे धीरे ठीक होता जा रहा है लेकिन मैं पहले जूते का काम करती थी हमारा काम अब तक बंद है हमारा मालिक अभी हमें काम पर नहीं रख रहा है इसीलिए मुझे अभी भी तलाश है कि मुझे कोई काम मिल जाए या मेरे माता-पिता को काम मिल जाए जिससे हमारी आर्थिक स्थिति ठीक हो जाए। 12 वर्षीय राजकुमारी ने बताया अब हमारे स्कूल खुल गए हैं जैसे ही हमारे माता-पिता का काम लगेगा तो मैं स्कूल जाना शुरू कर दूंगी क्योंकि मैं पहले ट्यूशन जाती थी जैसे मेरे माता-पिता को रोजगार मिलेगा तो मैं फिर से ट्यूशन जाने लगूंगा। क्योंकि अब हमारा धीरे-धीरे स्कूल जाना शुरू हो गया है। 12 वर्षीय अयान ने बताया कि मेरे पापा का अभी अभी काम लगा है लेकिन समस्या की बात यह है कि बहुत कम पैसों में मेरे पापा को काम मिला है जिससे वह सबसे पहले कमरे का किराया अदा करेंगे उसके बाद ही हमारी कुछ आर्थिक स्थिति ठीक हो सकेगी क्योंकि हमारे ऊपर बहुत सा कर्ज हो गया है। जिसे चुकाने के लिए मैं भी काम की तलाश में हूं। इसी कड़ी में 12 वर्षीय परिवर्तित नाम आशा ने कहा लोक डउन के समय में ही मेरे पिताजी चल बसे थे और मैं अपने घर में अपनी माताजी,भाई बहन के साथ रहती हुँ। इस समय हम अपने चाचा चाची के साथ घर में रह रहे हैं। लेकिन दुविधा यह है कि मुझे कुछ काम नहीं मिल पा रहा है जिसकी वजह चाचा चाची अब ज्यादा दिन हमें अपने घर में पनाह नहीं दे सकेंगे। इसीलिए मैं काम की तलाश कर रही हूं यदि जल्द काम नहीं मिला तो मेरे भाई बहनों की देखभाल कैसे होगी। इसी कड़ी में 13 वर्षीय सुनीता ने कहा मेरी मां बहुत बीमार है जिसके इलाज के लिए मैं काम कर रही हूं। मैं सुबह अपनी मां की देखभाल करती हूं और शाम को कोठी में काम करने के लिए जाती हूं। इस तरह बच्चो के विचार पत्रकारों के समक्ष आये जिसे जानने के बाद यह पता चला की बच्चो के लिए अभी कठिन समय है वह अलग अलग परिश्तितियों से गुजर रहे हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

खेलकूद के कारण बच्चों नहीं दे रहे हैं शिक्षा पर गौर

किशन

जब हमारे पत्रकार बच्चों के पास पहुंचे तो हमारे पत्रकारों ने यह जानने की कोशिश की क्या इस समय बच्चे अच्छे से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं या नहीं बच्चों से बातचीत करने के दौरान काफी बातें सामने आई जैसा कि आज हम आपको कहानी के माध्यम से बताएंगे बच्चों ने बताया भैया जैसा कि आप जानते हैं पहली समस्या तो यह है कि कोरोना की महामारी है दूसरी समस्या यह है कि इस समय स्कूल भी बंद है इस कारण हम बच्चे समय पर शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं फिर एक 10 वर्ष की बालिका ने बताया जैसा कि आप भी जानते हैं इस कोरोना के कारण अभी भी कुछ माता पिता के काम लगे हुए हैं और कुछ के नहीं लगे हुए हैं इस कारण वह अपना और अपने परिवार का पालन पोषण करने में भी काफी कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं और जिनके इस समय काम नहीं लगे हुए हैं वह अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल में शिक्षा प्राप्त करवाते हैं परंतु इस समय उनके पास अपना घर का पालन पोषण करने तक के पैसे नहीं है फिर हमारे पत्रकारों ने उन बच्चों के माता-पिता से जाकर बातचीत की जिनके इस समय काम नहीं लगे हुए हैं माता पिता ने बताया भैया जैसा कि आप तो जानते ही हैं हमें इस समय कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है इस समय स्कूल बंद है और ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं बच्चे समस्या यह पर यह है कि हमारे पास तो मोबाइल ही नहीं है इस कारण बच्चे शिक्षा पर अब भी नहीं कर पा रहे हैं फिर हमारे पत्रकारों ने माता-पिता से सवाल किया फिर यह लोग पूरे दिन क्या करते हैं क्या आप शिक्षा प्राप्त

नहीं कराते हैं माता पिता का कहना है हम लोग कहां इतना पढ़े लिखे हुए हैं जो कि हम अपने बच्चों को पढ़ा सकें यह बच्चे सुबह से खेल में लग जाते हैं और हम जब इन्हें बुलाते हैं तो यह है दूर को भाग जाते हैं इस कारण यह बच्चे बात को नहीं सुनते हैं फिर हमारे पत्रकार उन माता-पिता के पास पहुंचे जिनका इस समय थोड़ा बहुत काम चल रहा है उन माता-पिता से बात की तो माता-पिता ने बताया हम तो सुबह ही काम पर चले जाते हैं और फिर हमें अंदाजा भी नहीं रहता है कि यह बच्चे क्या कर रहे हैं और जब हम काम से आते हैं और अपने बच्चों का काम चेक करते हैं तो यह बच्चे कुछ भी काम नहीं करते हैं और सुबह से खेलकूद में लग जाते हैं माता पिता का कहना है इन बच्चों को लॉकडाउन से पहले जो भी शिक्षा प्राप्त हुई थी अब वह सब दिन पर दिन भूले जा रहे हैं और कहना यह भी है कि जल्द से जल्द कोरोना महामारी खत्म होए और बच्चे शिक्षा पर ध्यान दें

बड़े व्यक्तियों से की बच्चो ने अपील खेल-कूद की जगह में न करें मल-मूत्र

किशन

यह खबर नोएडा के सेक्टर 126 की है हमारे पत्रकारों ने सपोर्ट ग्रुप मीटिंग के माध्यम से बच्चों से जाकर बातचीत की तो बच्चों ने बताया भैया हमारे घर के थोड़ी सी आगे एक बड़ा सा पार्क है और हम बच्चे उस पार्क में खेल खेलने जाते हैं तो वहां आसपास के लोग हमें उस पार्क के अंदर नहीं जाने देते हैं वहां पर बाथरूम नहीं बना हुआ है यदि किसी बड़े भैया लोगों को बाथरूम लगता है तो वह लोग पार्क के बाहर जाकर नहीं करते हैं और इधर उधर पार्क के कोनो में कर देते हैं जिससे कि वहां पर काफी बदबू का सामना भी करना पड़ता है और यदि वहां पर कभी कोई चेकिंग वाला आता है तो वह हमें इसीलिए वहां से भगा देते हैं।

वह कहते है कि आप लोग ही यहां पर बाथरूम करते हो और हम उन्हें यह भी बताते हैं कि हम लोग नहीं करते हैं और दूसरे भैया लोग करके जाते हैं तो वह जब भी हमारी बात को नहीं समझते हैं और हम से गाली गलौज करते हैं और मारते भी हैं और पार्क से भगा भी देते हैं और बच्चों ने यह भी बताया भैया जिस गांव में हम बच्चे रहते हैं हम ने वहां के बड़े भैया लोगों से भी यह बात बताई है तो वह लोग उन्हें समझा देते हैं और उस जगह से उन्हें भगा भी देते हैं परंतु जब यह भैया पार्क से चले जाते हैं तो वह लोग जो पार्क में बाथरूम करते हैं तो वह हमें मारते भी है और वह लोग गाली गलौज भी करते हैं इस कारण हम बच्चे इस समय ज्यादा पार्क के अंदर नहीं आ रहे हैं क्योंकि वहां पर वह लोग भी होते हैं और वह लोग हमें दोबारा से परेशान ना करें इस कारण हम लोग पार्क के अंदर नहीं जा रहे हैं। हम बच्चे बड़े व्यक्तियों से यह अनुरोध करना चाहते हैं की आपम लोग पार्क के अंदर मल-मूत्र न करें और न ही हम बच्चो को पार्क से भगाएं हम बच्चे खेलने कूदने के लिए पार्क में आते हैं।

मजबूरी में कम दिहाड़ी पर छोटे-छोटे बच्चे धो रहे बर्तन

रिपोर्टर का नाम किशन एवं बातूनी रिपोर्टर मोनिका

जैसा कि आप भी जानते हैं इस समय अभी अभी कोरोना की महामारी खत्म नहीं हुई है पूरे देश भर को कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है जब हमारे पत्रकार कुछ बच्चों के पास पहुंचे तो बातचीत करने के दौरान बच्चों ने बताया भैया हमारे यहां पर कुछ ऐसे बच्चे हैं जोकि वह नोएडा में होटल पर बर्तन धोने का काम करते हैं और यह बच्चे अपने घर का खर्चा चलाने के लिए होटल पर काम करते हैं और बातचीत करने के दौरान बच्चों ने बताया भैया जैसा कि आप भी जानते हैं इस समय कितनी ज्यादा मात्रा में ठंड पड़ रही है इस समय पानी में हाथ डालना बहुत ही खतरनाक कार्य है और इन बच्चों की तो मजबूरी है कि यह काम नहीं करेंगे तो दो वक्त की रोटी कहां से मिलेगी इस कारण इन्हें काम करना पड़ रहा है यह बच्चे सुबह के 8:00 बजे से रात के 11:00 बजे तक होटल पर रहते हैं और यह बच्चे वहीं पर भोजन भी करते हैं और जब एक साथ खाने की थाली इकट्ठा हो जाती है तो जब बच्चे इसे धोने जाते हैं तो इस समय पानी ज्यादा ठंडा होने के कारण बच्चों को मजबूरन ठंडे पानी में हाथ डालना पड़ता है समस्या इस बात की है कि जब यह बच्चे अपने महीना होने के बाद अपने मालिक से अपनी तनखा मांगते हैं तो बच्चों को यह बहला-फुसलाकर कहते हैं कि इस समय काम नहीं चल रहा है तो अगली बार पैसे ले लेना और बच्चों को मजबूरन मालिक की बात मानना पड़ती है यदि हम बच्चे गुस्से में यहां से काम छोड़ कर चले जाते हैं तो हमें पहले महीने की भी तनखा नहीं मिलेगी इस कारण हमें मालिक की बात को सुनना पड़ता है और जब यह बात माता-पिता को बताते हैं तो माता-पिता भी डांटते हैं कि हम घर का खर्चा कैसे चलाएंगे तो हमें जब भी माता-पिता की मजबूरन बात सुनना पड़ती है

मालिक के दबाव में कबाड़ा बीनने का काम रहा है अरविन्द

बातूनी रिपोर्टर अरविंद

यह खबर आगरा शहर में अतरौली क्षेत्र में रहने वाले अरविंद और दीपक की है आउटरीच के दौरान बालकनामा पत्रकार ने कुछ बच्चों से बातचीत किया 11 वर्षीय अरविंद अतरौली स्टेट बैंक के पीछे अपने माता पिता के साथ रहता है जो कि वह कक्षा 1 में पढता है ने बताया कि एक व्यक्ति मेरे घर पर आया और मेरी मां से बोला कि आपका बच्चा बड़ा हो गया है और आप इसे काम पर लगा दीजिए तब मेरी मां ने मुझे उस व्यक्ति के साथ काम करने को कहा और उस व्यक्ति ने मुझे लालच दिया कि मैं तुम्हें अच्छा खाना और पैसे दूंगा और जो काम तुम से मैं करवाउंगा वह काम तुमको करना पड़ेगा मैं उस व्यक्ति के साथ काम करने चल दिया जब उस व्यक्ति ने मुझे बताया कि तुम्हें कबाड़ा बीनकर लाना है और जितने का भी कबाड़ा बिकेगा उसमें से मैं तुम्हें आधे पैसे दूंगा।

इस तरह मैंने कबाडा बीनने का काम करना शुरू कर दिया लेकिन वह व्यक्ति मुझे रोज परेशांन करता है मुझे वह रोज कबाड़ा बीनने के लिए भेजता है। मैं रोज कबाड़ा बीनकर लता था लेकिन वह व्यक्ति आये दिन मुझसे सही व्यवहार नहीं करता जब मुझे कबाड़ा कम मिलता है तो मुझे वह व्यक्ति मारता है और पैसे भी नहीं देता है कभी कभी तो मवः मुझे खाना भी नहीं देता पूरे दिन मैं इतनी मेहनत करके कबाड़ा बीनकर आया करता था और उसके बाद भी वह व्यक्ति मेरे साथ ऐसा करता है जब वह व्यक्ति मुझे मारता था तो मेरे बहुत दर्द होता था इसलिए मुझे उस व्यक्ति के पास काम करने का मन नहीं करता है लेकिन बावजूद इसके वह व्यक्ति मुझे जबरन कबाड़ा बीने के लिए भेज देता है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

अपना रूप बदल बदल कर बच्चों को पकड़ रहे हैं, अनजान व्यक्ति

बातूनी रिपोर्टर रोहित,रिपोर्टरकिशन

यह खबर नोएडा के सोरखा गांव की है जब हमारे पत्रकारों ने पत्रकार बैठक की तो इस बैठक में बच्चों ने ज्यादा से ज्यादा मात्रा में हिस्सा लिया और बच्चों ने अपनी अपनी समस्याएं बैठक में रखी बच्चों के द्वारा यह दी गई जानकारी आई है कि सोरखा गांव में बच्चों को पकड़ने वाले आ रहे हैं और वह बच्चों को पकड़कर ले भी जा रहे हैं एक 12 वर्ष के बालक ने बताया हमारे गांव में बच्चों को पकड़ने वाले लोग भी आ रहे हैं और भैया हमारे यहां पर एक बच्चे को पकड़ लिया था और वह वहां से छूटकर आ गया बस इतनी सी बात सुनकर हमारे पत्रकार उस बच्चे के पास पहुंचे फिर उससे पूरी जानकारी प्राप्त की वह बालक का नाम रोहित है और वह 12 वर्ष का है वह सोरखा गांव का रहने वाला है उस बालक ने अपनी जानकारी देते हुए बताया भैया मैं शाम के 6:30 मिनट पर घर से बाहर निकला था और मैं अपनी बड़ी दीदी का मोबाइल खराब था उसे मैं ठीक करवाने गया था मैंने मोबाइल की दुकान पर जाकर मोबाइल ठीक करवाया ठीक करवाने के बाद मैंने हाल में दीदी को फोन लगाकर कहा कि फोन ठीक हो गया है आप बोलो तो लेकर आ जाऊं तो दीदी का जवाब आया कि हां लेकर आ जाओ और वहां से वापस लौटते समय जब मैं घर की ओर आ रहा था तो उस समय पूरी तरह से अंधेरा हो चुका था और रास्ते में मैं हंसते खेलते घूमते अपने घर की ओर आ रहा था तभी एक व्यक्ति ने अचानक से मेरा हाथ पकड़ लिया और वह मुझे डराने लगा और उस समय में ज्यादा डर गया था तभी मैंने हिम्मत करके रास्ते से कोई दो व्यक्ति निकल रहे थे तो उन्हें मैंने बताया कि भैया यह मुझे पकड़ कर

धमका रहा है और ले जाने की कोशिश कर रहा है तब तक मैंने इतना बोला कि वह मुझे छोड़कर भाग गया और फिर उन दोनों व्यक्ति ने उसका पीछा भी किया परंतु वह हाथ में नहीं आया और मैं वहां से दौड़कर अपनी दीदी को फोन लगाया और उन्होंने फोन उठा लिया और मैंने सभी यह बात दीदी को बताई तो वह मेरी ओर दौड़ी चली आई तब तक मैं बात बता ही रहा था तो मैं उनके पास पहुंच गया था फिर मैंने विस्तार में सारी जानकारी दी और जिस व्यक्ति ने मुझे पकड़ा था उस ने अपने मुंह पर पूरी तरह से सफेद वाली तोलिया बांध रखी थी जिससे कि उसकी शक्ल भी नहीं पहचान पाया और उस समय में ज्यादा डर गया था और जानकारी देते हुए मैं अपने घर की ओर चला गया।

बच्चों का कहना कि भैया जब यह लोग आते हैं तो हम इन्हें ऐसे पहचानते हैं कि यह लोग कबाड़ा चुनते नजर आते हैं या भीख मांगते नजर आते या बाबा बने नजर आते हैं या किन्नर बने नजर आते हैं तो हमें इन लोगों से सावधानी रखनी है और बच्चों का यह भी कहना है कि आप अपने बच्चों का स्वयं ध्यान रखें।

टूरिस्ट बसों की साफ सफाई करके करता हूं घर का गुजारा

बातूनी रिपोर्टर अर्जुन,रिपोर्टर किशन

यह खबर नोएडा के एक गांव की है जब हमारे पत्रकार फील्ड विजिट कर रहे थे तो हमारे पत्रकार ने देखा एक 12 वर्ष का बालक जिसका परिवर्तित नाम अर्जुन है वह एक बड़ी बस में पोछा मारने का काम कर रहा था तभी पत्रकार ने वहां पर जाकर अर्जुन से बातचीत की तो पअर्जुन ने बताया कोरोना महामारी के कारण उसके परिवार में को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। और कहा भैया आप तो जानते ही हैं हम लोग परदेस में रहते हैं यदि हम लोग यहां पर काम नहीं करेंगे तो ना ही हमारा और नाही हमारे घर का खर्चा चल पाएगा इस कारण हमें कुछ ना कुछ काम करना पड़ता है और इस कोरोरना माहमारी के कारण महंगाई भी बहुत ज्यादा आगे बढ़ गई है जसकी वजह से आसानी से काम नहीं मिल पा रहा है बहुत प्रयास करने के बाद मुश्किल से बस में साफ सफाई करने का काम हाथ लगा है।

इसी कड़ी में अर्जुन ने बताया जिस बस में साफ सफाई करने का काम करता हैं वह बस काफी बड़ी है जो लम्बे टूर के लिए चलती है यह टूरिस्ट बस है। जब यह बस वापस लौट कर आती है तो मुझे इस बस की पानी से कपड़े से पोछ- कर पूरी बस की सफाई करनी पड़ती है। समस्या इस बात की है जैसा कि आप भी जानते हैं जब यह बस दो से 3 दिन के लिए टूर पर जाती है तो इस बस पर काफी सारी धूल मट्टी हो जाती है और जो यात्री इस बस में सफर करते हैं वह लोग बस मैं उल्टी भी कर देते हैं और उस उलटी की गन्दगी भी हमें साफ करना पड़ता है उसमे से काफी बदबू भी आती है सफाई करते समय मन भी विचलित होता है अर्जुन ने बताया जब कभी बस को साफ करना होता है तो बस का मालिक मुझे फोन कर देता है और बस साफ करने के लिए बुला लेता हैइस काम को करने के मुझे महीने में 5000 रूपए मिलते हैं इन पैसों से में से मैं कुछ पैसे मैं रख लेता हूं और बाकी के पैसे मैं अपने माता-पिता जी को दे देता हूं जिससे थोड़ा बहुत घर का खर्चा चल जाता है। इसी तरह मेरे घर की गुजर बसर हो रही है।

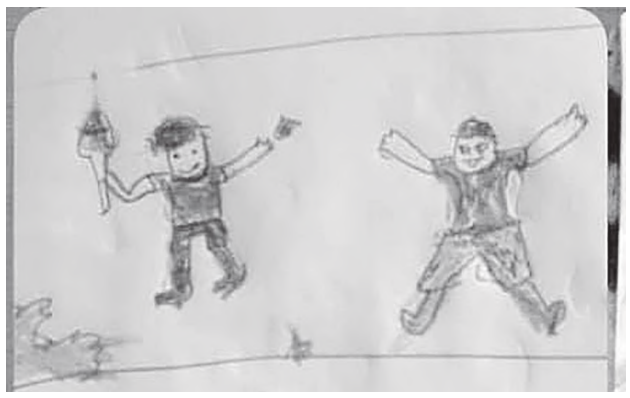

साहिल की कहानी उसकी जुबानी

बातूनी रिपोर्टर साहिल

यह खबर आगरा शहर में रहने वाले व भिक्षावृत्ति करने वाले बच्चों की है आगरा में ए एच टी यू प्रभारी द्वारा भिक्षावृत्ति रेस्क्यू चलाया जा रहा है जिसमें बालकनामा पत्रकार ने भी भाग लिया साथ ही भिक्षा वृत्ति करने वाले बच्चों को पकड़ा जिस दौरान उन बच्चों से बातचीत किया 10 वर्षीय साहिल ने बताया कि मैं नौबस्ता क्षेत्र मैं रहता हूं और वहां पर एक व्यक्ति आया और मुझसे बोला कि मैं तुझे खाना और पैसे दूंगा और उसके बदले में मैं तुझसे जो काम करवा लूंगा वह काम तू करेगा मैं मान गया वह व्यक्ति मुझे रोज घर से लेकर जाता और मुझे चौराहे पर भीख मांगने के लिए बोलता है और वहां पर मुझे खाना खिला देता है और जितना भी मैं दिन भर मैं मांगता हूं उसमें से मुझे 100 देकर जाता है बाकी सारे पैसे वह अपने बॉस को देदे आता है साथ ही बालक ने बताया कि इन लोगों का एक गैंग बना हुआ है जो कि अलग-अलग स्थान से बच्चों को लेकर आता है और लालच देकर उन बच्चों से भीख मंगवाते है और ऐसे ही बच्चे जब बालक ने यह सारी बातें बताई तो पुलिस वाले उस गैंग की खोज कर रहे हैं और पता चला है कि जो इस गैंग में बॉस था वह भाग गया है।

क्यों करना पड़ता है ऐसी कठिनाइयों का सामना

बातूनी रिपोर्टर साहिल, रिपोर्टर किशन

यह खबर नोएडा के एक स्थान की है जहां पर 200 झुग्गियां बनी हुई है हमारे पत्रकार वहां पर जा के कुछ नन्हे-मुन्ने बच्चों से मुलाकात की तो पता चला इस जगह लाइट की समस्या होने के कारण बच्चों को होती है बहुत रुकावटें एक 10 वर्ष के बालक ने बताया भैया यहां पर हम लोग झुग्गी में रहते हैं यहां पर हमें महीने के 12 सो रुपए मात्र देते हैं यहां पर लाइट की ज्यादा समस्या रहती है यहां पर लाइट चोरी की आती है यहां पर लाइट रात के 6 बजे आती है और सुबह के 6:00 बजे चली जाती है बच्चों ने बताया भैया जैसा कि आप तो जानते ही हैं हम मजदूर लोग हैं हमारे माता पिता तो सुबह से काम पर निकल जाते हैं फिर वह लोग शाम के 6:00 बजे तक आते हैं तब तक हम लोग यहां पर काफी परेशानियों से जूझते हैं जैसा कि आप भी जानते हैं हमारे पास हमारे माता पिता मोबाइल भी दे जाते हैं बात करने के लिए यदि कोई दिक्कत होती है तो हम तुरंत फोन करके अपने माता-पिता को बुला लेते हैं इस कारण हमारे पिताजी हमें फोन देकर चले जाते हैं समस्या इस बात की है जब कभी हमारा यहां पर मन नहीं लगता तो हम अपने मोबाइल में कुछ ना कुछ सुनने वह देखने लगते हैं जैसे गाना वीडियो आदि और जब हमारा मोबाइल की बैटरी खत्म हो जाती है तो हम मोबाइल चार्ज करने के लिए इधर-उधर भटकते हैं क्योंकि जब हमारे माता पिता जी आते हैं तो हमें मोबाइल की

बैटरी खत्म होने के कारण डांट सुननी पड़ती है हम डॉट ना सुनने के कारण मोबाइल चार्ज करने का इंतजाम करते हैं फिर बालक ने बताया भैया जब हम मोबाइल चार्ज करने की खोज में निकलते हैं तो अगल बगल के लोग मोबाइल चार्ज करने के लिए लगा तो लेते हैं हमें अपना चारजर लाना पड़ता है और फिर चार्ज पर लगा देते हैं परंतु यदि हम वहां पर बैठे रहते हैं मोबाइल का देखभाल करते हैं तो कोई दिक्कत नहीं आती है यदि हम वहां से मोबाइल को लगाकर चले जाते हैं तो हमारा मोबाइल चोरी हो जाता है और एक बार ऐसी घटना हो चुकी है जिस कारण हम हम लोग किसी के यहां पर मोबाइल नहीं लगाते हैं और ज्यादा बैटरी भी खर्च नहीं करते हैं

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बच्चों की चिंता- माता पिता का कोठियों में नहीं रहा पहले जैसा काम

बातूनी रिपोर्टर मोनिका, रिपोर्टर किशन

जब हमारे पत्रकारों ने हर एक कांटेक्ट पॉइंट पर दौरा किया तो दौरा करने के दौरान पता चला लगभग 15 बच्चों ने बताया कि भैया जैसा कि आप जानते हैं इस समय तो हम बच्चे कोरोना काल से परेशान है और अब यह धीरे-धीरे खत्म हो रहा है हम बच्चों को समस्या इस बात की है की हमारे माता पिता लॉकडाउन से पहले कोठियों में काम करने जाते थे कोठी में एक व्यकित चार से पांच घरों में काम करता था कोठी में बर्तन धोना पोछा लगाना और बच्चों की देखभाल करते थे यह काम माता-पिता करते थे लॉकडाउन से पहले जब माता पिता कोठी में काम करने जाते थे तो जब 4 से 5 घरों में काम करते थे जिससे घर का पूरा घर का खर्चा सही प्रकार से चल जाता था इसी कड़ी में पत्रकारने कुछ माता-पिता से भी बात की जो कोठी में काम करने जाते थे तो माता-पिता ने बताया भैया जब हम लोग लॉकडाउन से पहले काम कर ने जाते थे तो उस समय हमें कुछ परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता था और अब समस्या इस बात

की है कि जब लोकडाउन से पहले हम लोग ज्यादा घरों में काम करते थे और अब इस समय हम कोठी में काम करने जाते हैं तो एक कोठी में भी मुश्किल से काम मिल रहा है और जब एक घर में काम मिल जाता है और जब हम दूसरे घर में काम की तलाश करने जाते हैं तो वह लोग हमें पहले से ही इंकार कर के भेज देते हैं कि यहां पर काम नहीं मिलेगा और माता-पिता ने यह भी बताया जब लॉकडाउन के बाद हम कोठी में काम की तलाश करने गए तो हमारा पूरी प्रकार से कोरोना चेक करवाया फिर हमें अपने घर के अंदर आने की इजाजत दी और अब समस्या इस बात की है कि पहले से ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है इस समय ना ही हम अपने घर का अच्छे से खर्चा चला पा रहे हैं और ना ही कमरे का किराया दे पा रहे हैं और इस समय स्कूल भी बंद होने के कारण हमने बच्चों का ट्यूशन भी लगवा रखा है और जीसके पैसे देने में भी काफी परेशानी हो रही है और बच्चों का कहना है कि जल्द से जल्द कोरोना कालखत्म हो जिससे इन सभी परेशानियों का सामना ना करना पड़े

गांव की खेती-बाड़ीसे मिल रही है परिवार को राहत

रिपोर्टर किशन

पत्रकार बच्चों के पास पहुंचा और बच्चों को गोले में बैठाकरउनसे बातचीत की इस दौरान एक 13 वर्ष के बालक ने अपनी परेशानी को बताते हुए कहा भैया हमारे घर में 5 सदस्य हैं हम दो भाई और एक बहन है मेरे से छोटा भाई 9 वर्ष का है और छोटी बहन 6 वर्ष की है और मेरे पिताजी मोची का काम करते हैं कोरोना बीमारी से पहले हमारे पिता जी 400 रुपए कमा लेते थे इस समय कोरोना बीमारी के कारण ज्यादा मात्रा में बिक्री नहीं हो पा रही है इस समय पूरे दिन में 150 रुपए निकालना भारी हो रहा हैं इस कोरोना बीमारी के कारण ज्यादा मात्रा मे ग्राहक नहीं आ रहे हैं कभी-कभी तो घर का राशन लाने तक के पैसे भी बहुत मुश्किल हो पाते है पत्रकार ने बच्चे से सवाल किया यदि बिक्री नहीं हो रही है तो आपका खर्चा कैसे चल रहा है बच्चे ने बताया हमारे गांव में पिता जी के कुछ खेत है और उन में खेती भी हो रही है और आजकल पेटीएम ज्यादा मात्रा में चल रहा है तो हमारे गांव में हमारे चाचा जी रहते हैं तो उनसे खेत का जो राशन पानी आता है वह बिकवा कर पैसे पेटीएम पर मंगवा लेते हैं जिससे हमारे घर का अभी इन्हीं पैसों से खर्चा चल रहा है हमारे पत्रकार ने फिर एक सवाल किया आपकी माताजी क्यों काम नहीं करती है तो बच्चे ने बताया हमारी माता जी के पेट में मवाद भरा हुआ है जिसके कारण वह अधिकतर बीमार ही रहती है,इस कारण उनके पेट में दर्द उठने लगता है। हमारी माता जी इस कारण काम करने नहीं जाती है बच्चे ने बताया हमने कई बार अपने पिता जी से बोला है कि हम भी कहीं काम पर लग जाए तो पिताजी कहते हैं जब तक मैं जिंदा हूं तुम्हें काम करने की कोई जरूरत नहीं है और यह बाल मजदूरी कहलाती है जब तक आप की 18 वर्ष उम्र नहीं हो जाती तब तक आपको काम नहीं करना है फिर उसके आगे काम कर सकते हो

घर की जिम्मेदारी संभाल रही रजनी

बातूनी रिपोर्टर मोनिका, रिपोर्टर किशन

यह खबर आगरा शहर क्षेत्र बर वाली गली में रहने वाली 14 वर्षीय रजनी की है विजिट के दौरान बालकनामा पत्रकार ने बालिका रजनी से बात किया बातचीत के दौरान बालिका रजनी ने बताया कि मैं अपने परिवार के साथ किराए के मकान में रहती हूं और मेरे तीन छोटे छोटे भाई हैं मैं अपने भाई बहनों में बड़ी हूं इसलिए मुझे घर संभालने की सभी जिम्मेदारी दे दी है। मैं चेन में कड़ियां जोड़ने का का काम करती हूं जो कि 1 किलो चैन बनाने पर 25रूपए का काम होता है इसमें 1 किलो चैन में कड़ियां जोड़ने में पूरा दिन लग जाता है वह काम करने में मुझे काफी परेशानियां होती है जैसे कि चेन में कड़ी जोड़ने पर आंखों में दर्द होने लगता है क्योंकि चेन में कड़ियां जोड़ने का यह नजर का काम बहुत ही बारीक काम है यह काम करना मेरी मजबूरी है लेकिन यदि मैं यह काम ना करूं तो मेरे घर का खर्चा चलान बहुत ही मुश्किल हो जाएगा क्योंकि मेरे माता-पिता किराए के मकान में रहते हैं और इस समय मेरे माता-पिता का काम नहीं चल रहा है इस कारण मैं यह काम करके अपने घर का खर्चा चला लेती हूं इस समय हमें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

बच्चो की पारिवारिक समस्या,जुग्गी किराया 600 रुपए पर नहीं मिलती बिजली-पानी की सुविधा

रिपोर्टर शम्भू

जो बच्चे खेल दिखाने का काम करते हैं और कलम,गुब्बारे बेचते हैं इन बच्चों को अक्सर एक स्थान से दूसरे स्थान को बार-बार बदलना पड़ता है ऐसा क्यों चलिए इस खबर के माध्यम से जानकारी प्राप्त करते हैं सुनने में आया है कि नोएडा के क्षेत्र में एक वर्ष पहले ही झुग्गी झोपड़ी टूट गया था जिसकी वजह से इन्हें कई स्थान बदलने पड़े हैं खासतौर पर यह उन स्थानों का चुनाव करते हैं जहां जंगल झाड़ हो या खेत खरिहानी हो उस जगह को यह साफ सफाई करके वहां अपनी झुग्गी बनाते हैं जिसका इन्हें अलग से किराया भीं देना होता है क्योंकि यहलोग रोज कमाने,खाने वाले होते हैं इनके पास इतना पैसा नहीं है कि यह अच्छे कमरे लेकर किराए पर रह सकें। लेकिन बार-बार स्थान बदलाव करने की वजह से इन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जैसे कि जिस स्थान पर वर्तमान में रह रहे हैं वहां ना तो बिजली की सुविधा है और ना ही मीठे पानी की सुविधा होती है यहां तक कि इनको कपड़े भी धोने के लिए पानी नहीं मिलता हैं एक ही वस्त्र को हफ्ते दिनो तक पहनने पड़ते हैं क्योंकि इनके आस-पास पानी का बिल्कुल भी साधन नहीं है इस पर जाएजा लेने हेतु जब बच्चो से बातचीत किया गया तो उन्होंने बताया कि जब हम मकान में रहने वाले लोगों से पानी मांगते हैं तो वह लोग

हमें एक-दो बार पानी दे देते हैं लेकिन जब दोबारा मांगने के लिए जाते हैं तो गाली गलौज देकर वह हमें भगा देते हैं इन जगहों पर मीठा पानी 10 की एक बोतल मिलती है जिसे हमे पीने के लिए रोज खरीदनी पड़ती है लेकिन हमें अपने कपड़े , बर्तन धोने के लिए पानी आसानी से प्राप्त नहीं होता है इस वजह से हम आये दिन अलग-अलग स्थानो का चुनाव करते रहते हैंलेकिन कही भी हमें ऐसा स्थान नहीं मिलता जहाँ हमें पानी और बिजली की सुविधा प्राप्त हो सके। चौका देने वाली बात यह है कि किसी प्रकार के साधन न होने के बावजूद भी इनको एक झुग्गी का किराया 500 से 600 तक देना पड़ता है जहां किसी प्रकार की सुविधा नहीं है। बार-बार स्थान बदलने की वजह से इनके बच्चे भी शिक्षा से दूर हो जाते हैं ऐसी स्थिति में इनका कहना है कि कोई इनको मदद करें ताकि यह एक ही स्थान पर रहकर कामकाज कर सकें और इन्हें दर-दर न भटकना पड़े।

गायें का दूध बेचकर घर का खर्चा चला रहे बच्चे

रिपोर्टर आंचल

लखनऊ की बालक नामा रिपोर्टर आंचल जब लवकुशनगर कांटेक्ट पॉइंट पर काफी महीनों के बाद विजिट के लिए गई और बच्चों से सामाजिक दूरी बनाकर बातचीत करने के दौरान उनकी समस्या जानने की कोशिश करी तो एक बच्ची ने अपनी समस्या बताते हुए यह कहा कि दीदी हमारे घर में कोई भी काम करने नहीं जाता है और यहां पर जितनी भी लड़कियां रहती है आसामी बस्ती में इन्हें बाहर जाने की इनके अभिभावक अनुमति नहीं देते हैं इसलिए हमारी मम्मी और हम काम करने नहीं जाते हैं तभी हमारे बालक नामा रिपोर्टर आंचल ने यह पूछा कि अगर कोई घर से बाहर काम करने नहीं जाता है तो आप लोगों का घर का खर्चा कैसे चलता है? तो एक बच्ची जिसकी उम्र लगभग 15 साल की है उसने यह बताया कि हमारे यहां गायों को पाला जाता है और जो गाय दूध देती है उसे बेचकर जो पैसे मिलते हैं उनसे ही हमारा घर का खर्चा चलता है लेकिन कभी-कभी यह हम लोगों को भूखे ही सोना पड़ जाता है क्यूंकि यहां पर नगर निगम वाले आते हैं और हमारी गायों को अपनी गाड़ियों में उठाकर ले जाते हैं और जब उनको छुड़ाने के लिए जाते हैं तो वह हम लोग से कहते हैं कि पैसे लेकर आओ और अपनी गायें छुड़ा कर ले जाओ यदि पैसे लेकर नहीं आए तो तुम्हारी गाय तुम्हें नहीं मिलेगी इसलिए हमें मजबूरन अपनी गायों को छुड़ाने के लिए कर्ज लेना पड़ता हैं हम उन्हें कर्ज के पैसे देकर अपनी गायें छुडवाकरले आते हैं हम बच्चो के परिवारों का घर का खर्चा चलने के लिए यही एक सहारा है जिससे हमारा पेट भरता है। अगर हमारी गाएं नगर निगम वाले ले जाते है तो हमलोग दूध की सप्लाई नही कर पाते है जिससे हमें पैसे नही मिलते और हमें भूखा भी रहना पड़ जाता है।

पढाई से दूर मजदूरी कर रहा है बचपन

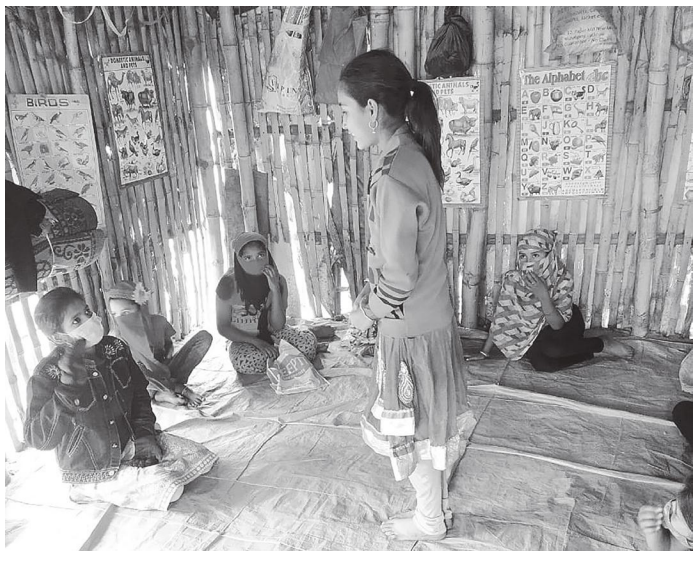

बातूनी रिपोर्टर,नूरजहां रिपोर्टर संगीता

पत्रकार ने लवकुशनगर में बैठक का आयोजन किया जिसमे बच्चों की समस्या जानने का प्रयास किया गया इस दौरान 12 वर्षीय परिवर्तित नाम रानी ने कहा कि मैं पढना चाहती हूँ मेरा मुझे पढ़ाई में मन लगता है लेकिन मैं काम करने जाती हूँ सुबह से दोपहर तक मैं काम ही करती रह जाती हूँ। एक बाजार है जिसमें बहुत सी दुकाने हैं उनमें से में लगभग 11 दुकानों में झाड़ू पोछा करने जाती हूँ यह काम करने में मुझे लगभग १२ घंटे दिनभर में लग जाते हैं रानी ने कहा कि मैं आपने मालिक से चाय बिस्कुट मांग कर आपना नाश्ता कर लेती हूँ सिर्फ चाय बिस्कुट से ही मैं 6 घंटे तक भूखे पेट रहती हूँ और दुकान का काम करती हूँ। लेकिन मैं अपना दोपहर का काम खत्म करने के बाद जब हम अपने घर वापस जाते हैं तब घर जाकर ही हम दोपहर का भोजन करते हैं उसके बाद फिर हम आपने काम करने के लिए वापस दुकान पर पहुच जाते हैं। इसी प्रकार हम रोज दुकानों में काम किया करते हैं इस काम में हमें एक दुकान से लगभग 100 रूपए महीने में प्राप्त होते हैं जिससे हमारा घर का खर्चा चल रहा है।

विशाल कर रहा है मलवे से ईंट बीनने का काम साईकिल लेने हेतु

रिपोर्टर रवि

दोस्तों आज हम आपको एक ऐसे बच्चे से मिलवा रहें हैं। जिसकी मेहनत करने के पीछे की वजह को जानकर आप भी इस बालक के मुरीद हो जाएंगे। तो चलिए मिलते हैं।12 साल के विशाल से जिसके परिवार ने लॉकडाउन में काफी मुश्किलों का सामना किया था। यहां तक कि कई दफा उन्हें खाने-पीने के लिए स्कूलों पर लंबी-लंबी लाइनों में लगकर खाना लाना पड़ा था।उसके परिवार की स्थिति को देखते हुए। चेतना संस्था ने कई दफा उनको सूखा राशन देकर उनकी मदद भी की थी।अब जब धीरे-धीरे सब कुछ पहले की तरह ठीक हो रहा है।तो उसके माता-पिता का भी काम लग गया है।

हालांकि इनकी तनख्वाह तो ज्यादा नहीं है। लेकिन ना होने से तो ठीक है।जब विशाल मलवे में से सही सही ईंटों को इकट्ठा कर रहा था।तब चेतना संस्था के कार्यकर्ता ने उससे पूछा की आप इतनी ठंड में यह मलवे में से ईंट क्यों निकाल रहे हो?आप तो किराए पर रहते हो? इसके जवाब में विशाल ने बताया कि उसे साइकिल चाहिए। इसलिए वह यह ईंटों को इकट्ठा कर रहा है। फिर कार्यकर्ता ने उससे पूछा कि ईंटों से साइकिल कैसे आएगी?तो उसने बताया की यह पूरानी ईंट 2 रुपए की बिकती है।और वह इन ईंटों से मिलने वाले पैसों को अपनी माताजी के पास जमा कर रहा है।और 4-5 हजार रुपए हो जाएंगे तो वह इन पैसों से अपने लिए एक साइकिल खरीद कर लाएगा। विशाल की इस बात को

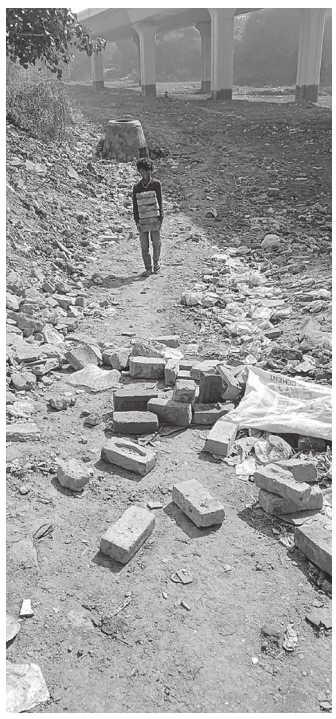

सुनकर कार्यकर्ता ने विशाल से कहा कि वह अपने माता-पिता से साइकिल के लिए कहे। तो विशाल ने बताया कि उसके माता का अभी एक कोठी में काम लगा है।और तनख्वाह भी ज्यादा नही है।और पिताजी तो पहले ही कम दिहाड़ी पर काम करते हैं।और पिता जी का काम कभी रहता है कभी नहीं रहता तो ऐसे में वह अपने लिएखुद साईकिल का इंतजाम कर रहा है। तो दोस्तों देखा आपने 12 साल के विशाल की हिम्मत और कुछ कर गुजरने की चाह को आप विशाल के बारे में क्या सोचते हैं। हमें कमेंट करके जरूर बताएं।

मीटिंग के दौरान बच्ची ने किया अपना दर्द बयां

बातूनी रिपोर्टर बबीता, रिपोर्टर सगीता

लवकुशनगर बस्ती में जब बालकनामा रिपोर्टर संगीता काफी दिनों बाद हालत सामान्य होते देख बस्ती में बच्चों से मिलने एवं सपोर्ट ग्रुप मीटिंग कराने गई तो सभी बच्चे संगीता को देख बहुत खुश हुए परन्तु एक १३ वर्षीय बच्ची जिसका परिवर्तित नाम किरण है के चेहरे पर देखने से ही लग रहा था की वो कुछ परेशानी में है और हमसे कुछ छुपा रही है, तब रिपोर्टर ने उसे बात करनी चाही लेकिन वह बच्ची कुछ भी कहने से कतरा रही थी, बहुत कोशिशो

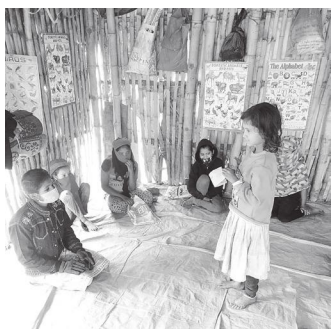

के बाद किरण ने उदासी की हालत में बोलना शुरू किया उसने बताया की मेरे एक पैर में काफी चोट लगी है जिसकी वजह से मुझे चलने में बहुत दिक्कत हो रही है, रिपोर्टर नें बच्ची से पूछा की आपके यह चोट कैसे लगी तब बच्ची नेरोते हुए बताया की हम सुबह सुबह कूड़ा बीनने जाते है और दूसरों के घरों से भी कूड़ा लेते हैं तभी रास्ते में जाते हुए मेरे पैर पर एक गाड़ी चढ़ गई जिससे मेरे पैर में चोट लग गई और आज बहुत दर्द भी हो रहा है चोट की वजह से पैर में सूजन भी आ गई हैं । उसने बताया की नही दीदी मैं वहीं रोने लगी, और वो गाड़ी लेकर चला गया मुझे देखा भी नही। उसके बाद मैं किसी तरह घर आयी तब मैंने दवा लगाई।

पढने की उमंग तो है,पर कामकाज बना मजबूरी

रिपोर्टर संगीता लखनऊ

जब पत्रकार बच्चों के साथ खेलने गए तो वहां पर देखा कि कूड़े के ढेर में कुछ बच्चे कूड़ा कबाड़ा चुन रहे थे तो लखनऊ के पत्रकार ने उन बच्चों से बातचीत करने की कोशिश की और उनकी समस्या जानने की कोशिश की और जब उन बच्चों से पूछा कि यह सारा कूड़ा कबाड़ा बिन कर आप क्या करोगे? तो एक बच्ची ने बताया कि दीदी यह कूड़ा कबाड़ा बीन कर हम लोग अपने घर ले जाते हैं और इसमें से प्लास्टिक और जीतनी अच्छा-अच्छा सामान होता है वह हम छाठ कर बेच

देते हैं और जो इसमे पैसे मिलते हैं वह हम सारे पैसे अपनी मम्मी पापा को दे देते हैं और उन्हीं पैसों से हम लोगों का घर चलता है उसके बाद पत्रकार ने उन बच्चों से पूछा कि क्या आप स्कूल नहीं जाते हो?जवाब में बच्चे ने बताया कि नहीं मैं स्कूल नहीं जाती हूं और हमारे माता पिता के पास कोई काम भी नहीं है जो वो करके हमारा पालन पोषण कर सके हम भी चाहते हैं कि हम लोग और बच्चो की तरह पढ़े लिखे पर कैसे? हमारे घर का खर्च कौन चलाएगा?बस यही सब सोच कर हम लोग कबाड़ा चुनते है और इसे बेच कर अपने घर का खर्च चलाते हैं।

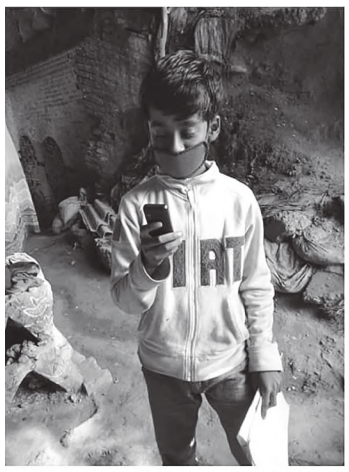

आर्थिक स्थिति बिगड़ने पर बच्ची को छोड़नी पड़ी पढ़ाई

बातूनी रिपोर्टर सुनीता,रिपोर्टर संगीता

लखनऊ के पत्रकार ने पुरनिया कांटेक्ट पॉइंट के बच्चों से बातचीत की कॉन्फ्रेंस कॉल के माध्यम से और बातचीत करने के दौरान हमारी बातूनी रिपोर्टर सुनीता ने बताया कि दीदी यहां पर एक बच्ची रहती है जिसका नाम शिवानी है वह पहले स्कूल जाती थी पढ़ने के लिए पर जब से यह कोरोना महामारी की वजह से लॉकडाउन हुआ तब से वह पढ़ने नहीं जा पा रही है और इस लॉकडाउन में काफी परेशानियां आ गई थी जिसके कारण से अब उसको घरों में झाड़ू पोछा करने जाना पड़ता है जिसके कारण से अब वह सेंटर भी हम लोगों के साथ पढ़ने नहीं आ पाती है पहले वह हम लोगों के साथ सेंटर पढ़ने आती थी पर अब उसके वहां काफी परेशानियां हो गई है जिसके कारण से अब वह सिर्फ अपने काम में ध्यान देती है और अब पढ़ाई पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे पाती है और अब जो ऑनलाइन पढ़ाई चल भी रही होगी तो उसको नहीं पता होगा क्योंकि उसके वहां बड़ा फोन नहीं है जिसके कारण से वह बिल्कुल ही नहीं पढ़ पाती है और जो उसको आता था वह भी धीरे-धीरे भूलती जा रही है यदि ऐसा ही हाल रहा तो धीरे धीरे स्कूल जाने वाले बच्चे मजबूरी की चलते अपनी पढाई लिखी नही क्र सकेंगे इसी तरह वह अपनी शिक्षा से दूर हो जायेंगे।

कूड़े से मिठाई बीनकर खाते हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर बबीता

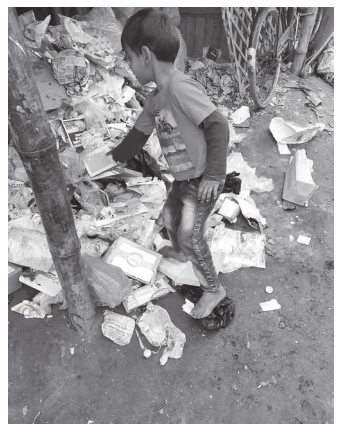

यह खबर है लवकुशनगर कांटेक्ट पॉइंट के आसामी बस्ती की अब जब लॉकडाउन खुल गया है जिसके कारण बाहर काम भी मिलने लगे हैं इसी के बीच हमारी बालक नामा रिपोर्टर आँचल ने लवकुश नगर कांटेक्ट पॉइंट आसामी बस्ती में बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया औरवहां की स्थिति जानने की कोशिश की बच्चों से बातचीत करने के दौरान यह पता चला कि अब जब लॉकडाउन खुल गया है जिसके कारण लगभग सारे अभिभावक काम के लिए बाहर जाने लगे हैं इसी के बीच सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने घर से बेफि क्र होकर बाहर घूमने जाते हैं हमारी बालकनामा रिपोर्टर आंचल जब बच्चों से बातचीत कर रही थी तो उसी दौरान बातूनी रिपोर्टर सुनीता ने यह बताया कि बच्चे बाहर घूमने के लिए नहीं जाते हैं बल्कि जो गलियों में कूड़ा पड़ा होता है उसमें से मिठाई के डब्बे चुनते हैं और उन डब्बो में से यदि कोई अच्छी मिठाई मिलती है तो वह बच्चे उसे खा लेते हैं और वह अपने घर में भी नहीं बताते हैं कि हम कहां जाते हैं कहां नहीं जाते हैं उनके मम्मी पापा पूछते ही नहीं है कि बच्चा "आप दिन भर कहां रहते हो? " क्योंकि उनके मां-बाप बाहर काम के लिए चले जाते हैं और इस बीच बच्चे दिनभर बाहर घूमने चले जाते हैं और फिर शाम को घर आ जाते हैं जिसके कारण उनके मम्मी पापा को नहीं पता चलता है कि वह दिन भर कहां थे साथ ही साथ हमारे बातूनी रिपोर्टर बबीता ने यह भी बताया कि दीदी यह बच्चे ग्रुप बना कर जाते हैं अलग-अलग जगहों पर मिठाई के डिब्बे चुनने के लिए अगर मिठाई का डिब्बा पूरा ही सही मिल जाता है तो उसे घर ले जाते हैं खुद खाते हैं और छोटे भाई बहनों को भी खिलाते हैं साथ ही साथ यह भी कहा कि दीदी अभी भी कोरोना महामारी नहीं खत्म हुई है अगर इनके मां बाप इन पर ध्यान नहीं देंगे तो इनकी जान को खतरा हो सकता है और यह बच्चे बीमार भी पड़ सकते हैं।यह बच्चे हर रोज अपने खाने की पूर्ती करने के लिए इसी तरह कूड़े में मिठाई के डब्बो को चूनते हैं और उसमे से बचीकुची मिठाई निकालकर खाते हैं।

तिरपाल के नीचे रह रहे बच्चो की दास्तान, पूरी रात आग जलाकर गुजरती है

बातूनी रिपोर्टर विजय

यह खबर आगरा शहर में आगरा कैंट स्टेशन के बाहर सड़क के किनारे झुग्गी व त्रिपाल में रहने वाले बच्चों की है आउटरीच के दौरान बालकनामा पत्रकार ने कुछ बच्चों से बातचीत की तो 12 वर्षीय विजय ने बताया कि अभी इस समय इतनी सर्दी पड़ रही है कि कुछ कह नहीं सकते और इस समय हमें काफी परेशानियां हो रही है क्योंकि हमारे पास ना तो रहने का कोई साधन है और न सही से हम बच्चे एक त्रिपाल की झुग्गी बांधकर उसमें रहते हैं और सर्दी में हम बच्चों को इतनी ठंड लगती है कि हम रात भर सही से सो नहीं पाते हैं और रात भर आग जलाकर अपनी रात काटनी पड़ती है और दिन में हम लोग मुश्किल से एक-दो घंटे धूप में जाकर सो जाते हैं फिर उसके बाद हमें अपना खाने पीने की व्यवस्था भी करना पड़ता है खाने की व्यवस्था करने के बाद हम बच्चे रात में आग जलाने के लिए जंगलों व आसपास के क्षेत्रों में लकड़ियां बीनने जाते हैं तब जाकर ऐसे हम आग जलाकर रात काटने का बंदोबस्त करते हैं और इस समय हमें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है रात में हमें इतनी सर्दी लगती है कि हमारी तबीयत भी खराब हो जाती है किसी तरह आग जला कर हम सभी अपना गुजारा कर लेते हैं

स्कूल बंद होने की वजह से बच्चे कर रहे है काम

बातूनी रिपोर्टर मेहताब, रिपोर्टर संगीता

लखनऊ के बालकनामा रिपोर्टर संगीता ने जब मड़ियाव कांटेक्ट पॉइंट पर सपोर्ट ग्रुप मीटिंग कराने के लिए गई थी और जब मैं सपोर्ट ग्रुप मीटिंग कराने लगी और जब मैं बच्चों की समस्या पूछी और बच्चों की समस्या जानने की कोशिश की तो एक बच्चे ने बताया कि दीदी मैं ठेला लगाने जाता हूं तो मैंने उस बच्चे से पूछा आप किस चीज का ठेला लगाते हो तो उस बच्चे ने बताया कि दीदी जो भी त्यौहार आता है जैसे कि अभी करवा चौथ या तो जो भैया दूज आता है तो उसमें जो छोटे-छोटे खड़े होते हैं उनको हम पेंट करके ठेले पर लगाकर बेचने जाते हैं और जो अभी साकट आने वाले हैं उसमें जो तिल के लड्डू बनते हैं वह हम लोग बनाकर ठेले पर लगाकर बेचने जाते हैं तो मैंने पूछा कि आप सुबह कितने बजे जाते हो और शाम को कितने बजे आते हो तो उस बच्चे ने बताया कि दीदी सुबह 9:00 या 10:00 बजे जाते हैं और शाम को 9:00 या 9:30 बजे तक आते हैं और मैंने पूछा कि आप खड़े-खड़े थकते नहीं हो तो उस बच्चे ने बताया कि नहीं दीदी थक तो जाते हैं पर मजबूरी है करें तो करें क्या जब से स्कूल बंद हुआ है तब से मैं यह काम करने लगा हूं और जब स्कूल खुला था मैं तो मैं सिर्फ स्कूल जाता था बस और सर जी के पास पढ़ने आता था और मैं कुछ नहीं करता था पर जब से स्कूल कोरोनामहामारी के चक्कर में बंद हुआ है तब से मैं यह काम करने लगा

वहशी व्यक्ति लड़कियों के साथ करते हैं, झेड़झाड़

रिपोर्टर शम्भू

इस खबर में हम उस स्थान के नाम को गोपनीय रखरहे हैं जहां की यह खबर है हमें पता चला है कि इस स्थान के आस-पास काफी सारी खेत और मैदान है जहां दूर-दूर तक बहुत कम लोग आते जाते नजर आते हैं इस स्थान पर खासकर देखा गया है कि कार में अश्लील हरकत करते हैं और उसी रास्ते से कोठी में काम करने वाली लड़कियां जब आ जा रही होती है तो उन्हें देखकर बड़े व्यक्ति अश्लील शब्द का प्रयोग करते हैं जिसकी वजह से उन्हें उस रास्ते से निकलने में बहुत घबराहट महसूस होती है लेकिन क्या करें मजबूरन उन लडकियों को उसी रास्ते से जाना पड़ता है क्योंकि अगर काम पर समय पर नहीं पहुंची तो कोठी की मालकिन की डांट फटकार सुनना पड़ता है। लड़कियों का कहना है कि उन बड़े व्यक्तियों का झेड़झाड़ करन उनका रोज का काम हो गया है यदि हम कुछ बोलते हैं तो ओर भी ज्यादा अश्लील शब्दों का प्रयोग करने लगते हैं जिसकी वजह से हम वहां से भागकर निकल जाते हैं लेकिन हमें बहुत भय लगा रहता है कि कही हमारे साथ कुछ गलत न हो जाए। 16 वर्षीया परिवर्तित नाम राधा ने कहा कि हमने अपने माता-पिता से इस विषय को लेकर चर्चा भी की थी लेकिन उन्होंने बोला कि जो वह करते हैं,कहते हैं उनकी बातों को मत सुना करो तथा सुनकर,देखकर उन्हें अनसुना कर दिया करो और सिर्फ तुम कामों से मतलब रखा करो इस दुनिया में ऐसे लोग बहुत मिलेंगे लेकिन हमें सिर्फ अपने कामों से मतलब रखना हैं । यह बात कहकर माता-पिता भी हमें शांत करवा देते हैं 14 वर्षीय परिवर्तित नाम रूपा ने कहा हम चाहते हैं कि ऐसी परिस्थिति से हमें निकाला जाए ताकि हम जब भी घर से बाहर निकले या कोठी के काम के लिए जाए हमें ऐसी परेशानियों का सामना ना करना पड़े।

अब कामकाजी बच्चे भी पढ़ सकते हैं

रिपोर्टर शम्भू

आपने अक्सर देखा होगा सडको के किनारे लाल बत्ती पर बच्चे कलम बेचते हुए फूल बेचते हुए गुब्बारे बेचते हुए खासतौर पर शिक्षा से दूर होते रहते हैं क्योंकि यह हमेशा अपने कामकाज में लिप्त रहते हैं अगर इन्हें कोई पढ़ाई-लिखाई करने के लिए बोलते हैं तो यह अपने काम का छोड़ कर पढ़ाई लिखाई नहीं कर पाते। इन्हीं बच्चों को परेशानियों को देखते हुए (राष्ट्रीय बालिका दिवस) के अवसर पर चेतना संस्था व सहयोगी एचसीएल फाउंडेशन व पुलिस की मदद से मोबाइल वैन का उद्घाटन किया गया है जिसमें सड़क एवं कामकाजी बच्चो को चलती फिरती वैकल्पिक शिक्षा प्रदान की जाएगी। यह सेवा नन्हे परिंदे प्रोजेक्ट के अतर्गत हैं बच्चो के लिए चलाई गयीहै।

यह मोबाइल वैन नोएडा के ऐसे स्थानों पर जाकर बच्चों को शिक्षा देगी जहां पर सड़क से जुड़े बच्चे एवं कामकाजी बच्चे होते हैं। जैसे की जो गुब्बारे,कलम बेचते इन बच्चों को उन्हीं स्थानों पर जाकर शिक्षा दी जाएगी जिन स्थानों पर बच्चे काम कर रहे हैं। इस मोबाइल वैन के उद्घाटन करने के लिए नोएडा के एम.एल.ए श्री पंकज सिंह, एचसीएल फाउंडेशन के निर्देशक निधि पुंधीर जी, कमिश्नर ऑफ पुलिस नोएडा अलोक सिंह जी मेंबर ऑफ पार्लिमेंट महेश शर्मा जी, चेतना संस्था के निर्देशक श्री संजय गुप्ता जी भी उपस्थित थे इन्होंने बच्चों को बधाई देते हुए बच्चों का मनोबल बढ़ाया और बताया कि खुशी है कि अब कामकाजी बच्चे भी इस मोबाइल वैन के सहयोग से पढ़ाई-लिखाई करेंगे और अपने जीवन में सुधार करेंगे।

भिक्षा नहीं शिक्षा देना है

रिपोर्टर शम्भू

कामकाजी बच्चे जो खासतौर पर देखा गया है कि सड़क पर यह लाल बत्ती के आस-पास भीख मांगते हुए नजर आते हैं इन बच्चों के लिए सरकार कड़े कदम उठा रही हैं सुनने में आया है कि अब कोई भी बच्चा सड़क या लाल बत्ती के आस-पास भीख नहीं मागेगा अगर कोई माता-पिता जबरदस्ती बच्चों को भीख मांगने के लिए भेजता है तो उसके खिलाफ कड़े कदम उठाए जाएंगे इसका प्रचार स्वंम वृंदा शुक्ला जी जो महिला सुरक्षा और बाल सुरक्षा की देखरेख करती है। उन्होंने माता-पिता को बताया कि अब बच्चों को जबरदस्ती भीख मांगने के लिए नहीं भेजेंगे बच्चे जो होते हैं वह हमारे समाज का फूल है उन्हें भी इन मासूमो का अधिकार है की वह पढ़ाई लिखाई करके आगे बढ़े। जब इस प्रकार के चर्चा चल रहा था तो माता पिता का कहना था कि हमारे पास कामकाज नहीं है इसलिए हमारे बच्चे कामकाज करके लाते हैं अगर बच्चे काम पर नहीं जाएंगे तो हमारा गुजारा कैसे होगा । वृंदा शुक्ला जी ने माता-पिता को बताया कि इस विषय पर हम आगे चर्चा करेंगे लेकिन बच्चे से कोई भीख नहीं मांगेंगे और बच्चों को शिक्षा की ओर बढ़ावा देना है।अगर आप सभी को किसी प्रकार के परेशानी होती है तो आपलोग स्वयं आकर अपनी परेशानी हमारे कार्यशाला में बता सकते हैं हम हमेशा आपकी मदद करने के लिए तैयार रहेंगे लेकिन बच्चों को शिक्षा के और बढ़ाना है।

कुत्ते की चपेट में फुटपाथ पर रहने वाले बच्चे

बातूनी रिपोर्टर आरती

चारबाग रेलवे लाइन के किनारे फुटपाथ पर रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से हमारी बालकनामा रिपोर्टर आंचल ने फोन के माध्यम से संपर्क किया और बच्चों से बातचीत करउनकी समस्या जानने की कोशिश की तो यह पता चला कि फुटपाथ पर रहने वाले बच्चे हर रोज कठिन परिस्थितियों से गुजर रहेहैं।

12 वर्षीय परिवर्तित नाम आरती ने अपने शब्दों में अपना दर्द बताया कि दीदी हमारे मम्मी पापा हमें मसाला बेचने के लिए ट्रेन के अंदर बेठे यात्रियों के पास भेजते हैं एक रोज मैं ट्रेन के अन्दर मसाला बेचने गयी लेकिन जब मैं अपने घर वापस जाने के लिए ट्रेन से मसाला बेचकर निकल रही थी तभी एक एक कुत्ते ने मेरे पैर में काट लिया

जिससे मेरे पैर में बहुत ही गहरा घाव हो गया मैं अपने मम्मी-पापा के साथ डॉक्टर के पास गई तो डॉक्टर अंकल ने मुझे सिर्फ एक इंजेक्शन लगा कर यह कह दिया कि इस घाव को ढकना नहीं है ऐसे ही खुला रखना है लेकिन मैं खुला रख कर भी नहीं रख पाटी हूं क्योंकि मक्खी मेरे पैर में लगने लगती है और काटने लगती है जिसके कारण मुझे कोई भी कपड़ा अपने पैर में बांधना पड़ जाता है।

इसी कड़ी में सोनू ने बताया कि इसी तरह हम बच्चो को आवारा कुत्ते हमें काट लेते हैं लेकिन हमारे अभिभावकों को इस बात की कोई चिंता नहीं रहती है ज्यादातर बच्चे अपने पैर के घाव को लेकर बहुत ही परेशान होते है दर्द दे मारे तड़पते,रोते ,बिलबिलाते रहते हैं इस समय बहुत ज्यादा कुत्ते बच्चो के इसी तरह दबोचकर काट लेते हैं गहरा घाव होने के कारण बच्चे अपने घाव को कपड़ो से नही ढक पाते। इन बच्चो के पास छोटा सा कोई रहने का अशिन्याँ भी नहीं है जिसमें बच्चे इत्मीनान से रह सके।

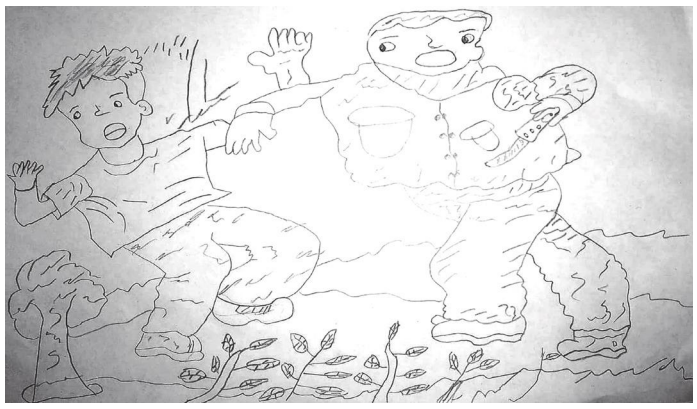

एक घटना की वजह से बच्चों पर पड़ा यह असर

रिपोर्टर शम्भू

नोएडा के एक स्थान जिसका नाम इस खबर में गोपनीय रखा जा रहा है इस स्थान पर एक बच्चे की हत्या हो गई है जिसकी वजह से आस-पास रहने वाले बच्चों के खेलकूद करने में माता पिता ने रोक लगा दी है सुनने में आया है कि जब से यह घटना हुई है तब से माता-पिता काफी डर गए हैं अपने बच्चों को घर से बाहर जाने नहीं देते हैं जिसकी वजह से बच्चे काफी परेशान हो रहे हैं बच्चों से बातचीत करने पर पता चला कि पहले तो लॉकडाउन महामारी के कारण हमें कई महीनों तक घर में बंद रहना पड़ा था लेकिन अभी हालही में हमें खेलने कूदने की आजादी मिली थी लेकिन इस घटना के बाद हमारे माता-पिता घर से बाहर नहीं निकलने देते हैं इस वजह से हम बच्चे परेशान हैं हम चाहते हैं कि मेरे माता-पिता ऐसा ना करें हमारे साथ जब बालकनामा के पत्रकार माता-पिता से मिला तो माता-पिता का कहना था कि जब से हमारे यहाँ बच्चे इतनियो बेदर्दी से मृत्यु हुआ है तब से हमें बहुत डर लगता है की कही ऐसा हमारे बच्चों के साथ ना हो जाये इसीलिए हम अपने बच्चों को घर से बाहर नहीं जाने देते हैं और जैसे ही यह माहौल शांत हो जाएगा तो पहले की तरह हम अपने बच्चों को खेलने कूदने के लिए बाहर भेजेंगे।

बच्चे बल्ब बनाने कामो में हुए लिप्त

बातूनी रिपोर्टर सूरज

लखनऊ के हमारे श्रम विहार नगर कांटेक्ट पॉइंट पर जब आंचल ने वीडियो कॉलिंग के माध्यम से बच्चों से संपर्क किया और बच्चों को अपनी परेशानियों को रखने का मौका दिया तो बच्चों ने उस मौके को खाली नहीं जाने दिया और बच्चों ने अपनी बातें रखी और अपनी समस्या बताई जिसमें से एक बहुत ही महत्वपूर्ण समस्या निकल रही थी ज्यादातर उस समस्या पर जब हमारे बालकनामा रिपोर्टर आंचल ने और बातूनी रिपोर्टर सूरज ने जानकारी लेनी चाही तो यह

पता चला कि श्रम विहार कांटेक्ट पॉइंट के कुछ बच्चे बल्ब बनाने का काम करते हैं वह एक दुकान में जाते हैं और वह दुकान वाले अंकल उन्हें खराब बल्ब लाकर देते हैं और कहते हैं इन्हें बनाकर वापस हमें दे जाना और फिर उसी तरह उन्हें और खराब बल्ब लाकर देते हैं उन्हें इस काम में प्रतिदिन के हिसाब से लगभग 100 मिल जाते हैं यह पैसे बच्चे अपने मम्मी पापा को दे देते हैं ताकि वह घर का राशन पानी लाकर रख सकें एवं छोटे छोटे भाई बहन आराम से पेट भर के खाना खा सके।

लालच में आकर बच्चे लगा रहे हैं जान की बाजी

लखनऊ के विनायकपुरम बस्ती में जब रिपोर्टर ने कम्युनिटी में विजिट की और बच्चों से सामाजिक दूरी बनाकर बातचीत सुनिशित की तभी उस समय एक बुजुर्ग व्यक्ति अपनी साइकिल पर कुछ मीठी चीज लेकर आ रहे थे और जैसे ही उन अंकल को बच्चों ने देखा तो बहुत तेजी से दौड़ कर उनके आ गए और हाथ में बाल का गुच्छा लिए हुए थे तभी हमारी बालक नामा रिपोर्टर आंचल में उसी समय बच्चों से बातचीत करें और यह पूछा कि आप सभी को यह बाल के गुच्छे कहां से मिली तो बच्चों ने बताया कि दीदी जब हमारी मम्मी या बड़ी दीदी कंघा करती है और जो उस कमरे से बाल निकलते हैं हर रोज हम उन्हें इकट्ठा कर लेते हैं और जब यह अंकल आते हैं महीने में एक या दो बार तो हम वह माल इकट्ठा करके उन्हें देते हैं और वह हमें खाने के लिए कुछ मीठा सा देते हैं खाने के लिए और जिन बच्चों के पास बाल नहीं रहते हैं वह अपने मम्मी पापा से पैसे लेकर वह खरीदते हैं खाने वाली चीज और बच्चों बाहर की चीजें खाते हुए उनके अभिभावक देखकर उन्हें कुछ नहीं कहते हैं और उन्हें अनदेखा कर देते हैं बल्कि उन्हें लगभग यह भी पता होगा कि इस समय कोरोना महामारी का काल चल रहा है जिसके कारण कोई भी बाहर की चीज नहीं खा सकते हैं वह भी खास खास खुली हुई औ नेर बच्चों को मनाना कर कर उन्हें खाने देते हैं बल्कि जिए जो बच्चे खा रहे हैं इस समय कोरोना महामारी काल के समय उनकी जान का भी खतरा हो सकता है

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471